शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 3, pp (109-115), Month: Sep. 2018

भारत में समाचारपत्रों का इतिहास, विकास एवं महत्व

डॉ0 सीमा देवी
असि0 प्रो0, राजनीति विज्ञान
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर
(उ0 प्र0) भारत
Email: seemabudh1@gmail.com

कुलदीप
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर,गौतमबुद्धनगर
(उ0प्र0) भारत
Email: kuldeepsinghbhidanu@gmail.com

सारांश

भारत में समाचार पत्रों ने स्वतन्त्रता संग्राम में एक मिशनरी के रूप में भूमिका अदा की। भारतीय समाचारपत्रों में आजादी के बाद जनता के प्रति उत्तरदायित्व की भावना से नए युग में प्रवेश किया। आजादी से पहले जहाँ अधिकांश पत्रों का स्वर सरकार विरोधी होता था, वहीं स्वाधीनता के उपरान्त वे सरकार से सामंजस्य भी बनाने लगे। समाज के विकास व देश में उत्पन्न चुनौतियों के प्रति सरकार को आगाह करने में भी समाचारपत्रों ने भी अहम भूमिका अदा की। देश में अनेक बार संवैधानिक संकट हुए, चार बार चीन व पाकिस्तान से युद्ध लड़े गए, अनेक प्राकृतिक आपदाएँ आई मगर सभी परिस्थितियों में समाचारपत्रों ने सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका अपनाई।[1] जनसंचार माध्यमों की इस भूमिका को देखकर ही शायद नेहरू जी ने यह कथन कहा होगा–''समाचार पत्र जनता की संसद है जिसका अधिवेशन सदा चलता रहता है। इस समाचार पत्र रूपी संसद का कभी सत्रावसान नहीं होता है। खबर लेना और लोगों तक पहुँचाना अखबार वालों का काम है।''

नेहरू जी के इस वाक्यांश से समझा जा सकता है कि प्रजातन्त्र में जनसंचार माध्यमों की महत्ता क्या होती है। समाचारपत्र जन भावना की अभिव्यक्ति, सद्भावों की उद्भूति और नैतिकता की सीढ़ी है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही साथ ये जीवन में अभूतपूर्व क्रान्ति के अग्रदूत हैं।

मुख्य शब्दः *समाचार पत्र, प्रिंट मीडिया प्रेस, लोकतंत्रीय, पत्रिकाएँ*

प्रस्तावना

नेपोलियन बोनापोर्ट ने कहा था कि–''चार विरोधी अखबार चार हजार संगीनों से अधिक खतरनाक होते हैं। इसी बात को शायरी के रूप में अकबर इलाहबादी ने कहा है–

खीचों न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।। [2]

भारत में प्रेस ने देश को विदेशी दासता से उबारने और इस उपमहाद्वीप के उत्थान में एक निर्णायक भूमिका है। उस समय यह निजी ऐजेन्सियों की तरह ही तत्कालीन राजनेताओं द्वारा अपने मकसदों को हासिल करने के वास्ते प्रचार के लिए सबसे उपयोगी और प्रभावी साधन बन गया। प्रेस ने राजनेताओं की परियोजनाओं और उनके विचारों के प्रचार–प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अखबारों ने बड़े साहसिक तरीके के जंग–ए–आजादी में शामिल होने के लिये हजारों युवाओं को उनकी जिम्मेदारियों का अहसास कराया।[3] समाज सुधार में समाचारपत्रों की महत्ता का सही प्रयोग करते हुए **राजाराम मोहन राय** ने **संवाद कौमुदी**[4] में उस समय की अनेक सामाजिक बुराईयों पर बिना किसी डर या भावना से प्रेरित होकर लिखा क्योंकि वे जानते थे कि मात्र कानून बनाने से ही समाज सुधार कार्य नहीं हो सकता है।

समाचारपत्र हर दिन शिक्षित भारतीयों को अपने देश की आजादी के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर प्रयास को प्रेरित करने, उनके राष्ट्रीय दायित्वों को याद दिलाने के लिए एक संदेश दिया करते थे। वर्तमान में भी प्रिन्ट मीडिया ने समाज के विभिन्न तबकों के बीच एक सामान्य समझ, जागरण और सहयोग का माहौल बनाया। साथ ही एक समान लक्ष्य को हासिल करने के मकसद से लोगों को एक मंच पर लाने और उन्हें एकजुट करने का काम भी किया।

एक बौद्धिक व्यक्ति की चेतना, जागृति लाने के लिए अपनी कलम की शक्ति का उपयोग करती है। कलम की शक्ति जौहर दिखाने का एक सशक्त माध्यम है। समाचारपत्र अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष में अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह करते हैं। किसी देश को हर दृष्टि से शक्तिशाली अथवा कमजोर बनाने में अखबारों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।[5] लोकतन्त्र में प्रेस के महत्व पर पुलित्जर ने (जिनके नाम से पुलित्जर पुरस्कार दिया जाता है) कहा है कि **'तथ्यों का प्रकाशन समाचारपत्रों का मुख्य कार्य है क्योंकि यह गोपनीय और छिपे हुए कोनों में जहाँ बुराई और निरंकुशता का वास है, जनमत और समझ का प्रकाश फैलाता है।**[6]

वर्तमान में समाचारपत्रों ने ज्ञान को समाज के किसी खास वर्ग की बपौती नहीं रहने दिया है बल्कि उसे आम लोगों तक पहुँचाया है। मगर यह समझना भूल होगी कि मात्र इससे ही समाज के ढँाचे में सकारात्मक परिवर्तन का आधार तैयार हो गया है। हमारे देश में आजादी के 70 साल बाद भी स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। देष की काफी आबादी निरक्षर है और जो निरक्षर है उसके लिए मुद्रण के क्षेत्र में कितनी भी बड़ी क्रान्ति न हुई हो, व्यर्थ है। क्योंकि वह न तो पढ़ सकता है और न ही लिख सकता है। साथ ही यह भी विचार का प्रश्न है कि समाचारपत्रों में जो कुछ प्रकाशित होता है क्या वह लोगों के जानने के लिए जनवादी अधिकारों के अनुरूप है। हमारा अनुभव बताता है कि ऐसा नहीं है। एक ही समाचार को अलग–अलग अखबार अलग–अलग ढंग से पेश करते हैं।[7]

घर, परिवार, शहर, प्रांत, देश और संसार की खबरे और हालात जानने की इच्छा और आवश्यकता सभी महसूस करते हैं और हमारें कुछ विचार भी होते हैं जिन्हें हम दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। इस कार्य के लिए प्राचीन काल में शिलालेखों आदि का प्रयोग राजाओं की आज्ञाओं

को जनता तक पहुँचाने के लिए किया जाता था, इस तरह हम कह सकते हैं पहले समाचारपत्र पत्थरों पर लिखे हुए होते थे। पुराने जमाने में प्रकाशन और छपाई की सुविधाएँ तो होती नहीं थी इसलिए यूरोप और पश्चिमी एशिया के देशों में जासूसों और संदेशवाहकों से खबरें एकत्र करने का काम लिया जाता था। हमारे देश में भी बनजारें लोग जगह–जगह घूमते थे और समाचार एकत्रित करके लोगों को गीतों और कहानियों के रूप में सुनाते थे।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। सूचनाओं, खबरों को लोगों तक पहुँचाने के लिए लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ पूरी मजबूती से खड़ा है। देश के कोने–कोने में जनसंचार माध्यम स्थापित हो चुके हैं। भारत के समाचार पत्र पंजीयक आर0एनआई0 के अनुसार भारत में 31 मार्च 2014 तक 996600 प्रकाषन पंजीकृत थे।[8] चैनलों व सोशल मीडिया के जलवे के बीच भी समाचारपत्रों का साम्राज्य बढ़ता ही जा रहा है। शिला लेखों, भोजपत्रों, भित्ती चित्रों से आरम्भ करके लाखों की संख्या तक पहुँचने में समाचार पत्रों को एक लम्बी प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ा जिसका प्रारम्भ रोम के जूलियस सीजर[9] के राज्य में हुआ था। उसने सर्वसाधारण के लिये हस्तलिखित जन घोषणाएँ जारी करना शुरू किया जिसे ईसा से 59 वर्ष पूर्व **'अक्ट डिउरना'** कहा जाता था। इसका अर्थ **डेली इवैन्ट (दैनिक घटनाएँ)** होता था। इसमें सीनेट में हुई बहस का संक्षिप्त विवरण लिखा होता था। लोग उन्हें पढ़ सके, इसके लिए उन्हें सभी आम जगहों में दीवारों पर लगा दिया जाता था।

सन् 1966 के लगभग यूरोप के शहरों में यह रिवाज था कि चौराहों पर खड़ा होकर एक आदमी हाथ से लिखे इश्तिहार को लोगों को सुनाया करता था। यह इश्तिहार सरकार की स्वीकृति से लिखा जाता था और इसे सुनने वाले इस सेवा के लिये **'गजीटा'**[110]दिया करते थे गजीटा उस समय का एक छोटा सिक्का होता था, इस तरह **'गजट'** शब्द की उत्पत्ति हुई, जिसे आजकल हम अखबार के लिये इस्तेमाल करते हैं। इस तरह समाचार पत्रों का सिलसिला शुरू हुआ। कहते हैं पहला छपा हुआ अखबार सन् 1609 में जर्मनी में निकला। इसके बाद इग्लैण्ड में 1620, फ्रांस में 1631 व अमेरिका में 1690 में निकला। वर्ष 1702 में लंदन में पहला नियमित समाचारपत्र **'डेली काउटेंट सेमुंअल बर्कले'**[11]द्वारा प्रकाशित किया गया।

सन् 1450 में जर्मनी के **गुटेनबर्ग** के मुद्रण का अविष्कार करते ही साक्षर समुदाय के लिये संचार वरदान बन गया। विकसित देशों में समाचार पत्र जीवन की अनिवार्य जरूरतों में गिना जाता है। अमेरिका में 95 प्रतिशत लोग समाचारपत्र पढ़ते हैं, उसके बाद रूसी अखबार प्रेमियों की गिनती होती है।[12] भारत में 18वीं सदी के अन्त में यानी 1780 से अखबार का पर्दापण हुआ। मगर भारत में इसकी शुरूआत बहुत पहले हो चुकी थी।

भारत में मौर्यकाल में सुव्यवस्थित संचार व्यवस्था अपनायी जाने लगी थी। सम्राट अशोक ने न केवल अपने विचारों के प्रचार–प्रसार हेतु व्यापक प्रबन्ध किये थे बल्कि इस बात की भी पूरी व्यवस्था की थी कि उनके विचारों के प्रति प्रज्ञा की प्रतिक्रिया क्या रहती है। गुप्त साम्राज्य के दौरान भी संचार पर जोर दिया जाता रहा तथा ताम्रपत्रों को भी प्रचार–प्रसार के माध्यम के रूप में अपनाया गया।[13]

मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही भारत में संवाद सेवाओं के क्षेत्र में नए युग का आरम्भ हुआ। मुगलों ने संचार सेवाओं के लिए सूचना अधिकारियों की नियुक्तियाँ की जिन्हें **'वाकयानवीस'** कहा जाता था। वाकयानवीस द्वारा भेजे गए खतों को दिल्ली में बादशाह को पढ़कर सुनाया जाता था। **अबुल फजल** ने अकबर के शासनकाल के वाकियानवीसों के बारें में लिखा है–"**देश में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में लिखित जानकारी साम्राज्य की उन्नति और समृद्धि के लिए बहुत जरूरी है, इससे जनता को भी बड़ा भारी लाभ है। वाकियानवीसी तो बहुत पुराने जमाने से चली आ रही थी लेकिन इसका सबसे अधिक लाभ अकबर के शासनकाल में उठाया गया है।**"

समाचारपत्रों की सुचारू व्यवस्था ब्रिटिशकाल में प्रारम्भ हुई जब भारत का प्रथम समाचार पत्र **'बंगाल गजट'** 29 जनवरी 1780 को प्रकाशित हुआ, जो **जेम्स अगस्ट हिक्की** की मेहनत व संघर्ष का परिणाम था। इसके बाद समाचारपत्रों के विकास में मील का पत्थर बना। सन् 1816 ई0 में **गंगाधर भट्टाचार्य** द्वारा सम्पादित प्रथम इण्डो–आंग्लिक समाचारपत्र **'बंगाल गजट'**। वर्ष 1818 में किसी भी भारतीय भाषा (बांग्ला) में समाचारपत्र छपा जिसका नाम **संवाद कौमुदी** था, इससे राजा राममोहन राय जुड़े हुए थे। वहीं हिन्दी में प्रथम समाचारपत्र होने का गौरव 'उदन्ड मार्तण्ड' को है, जिसका प्रारम्भ 30 मई 1826 को जुगल किशोर द्वारा किया गया। भारत में स्वतन्त्रता काल में यूं तो अनेक भारतीय भाषा के अखबार शुरू हो गए थे लेकिन अंग्रेजी सरकार की तरफ से अंग्रेजी समाचारपत्रों को अधिक संरक्षण दिया जाता था। इसी कारण से एक समय था, जब अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्रों की परिचालन संख्या अधिक होती थी लेकिन अब हिन्दी, तमिल और मलयालम भाषा के समाचार पत्रों की परिचालन संख्या अधिक होती है। मलयालम भाषा के एक समाचार पत्र **'मलयालम मनोरमा'** की परिचालन संख्या (लगभग 11 लाख) भारत के सभी भारतीय भाषाओं के समाचारपत्रों से अधिक है।[15]

आज विज्ञान ने चाहे कितनी भी उन्नति क्यों न कर ली हो लेकिन लिखित शब्द जिसे पत्रकारिता की भाषा में प्रिन्ट मीडिया भी कहते हैं, का महत्व कम नहीं हुआ है। इसलिए समाचारपत्र जनता के विश्वविद्यालय कहलाते हैं। समाचार पत्र जहाँ समाज का दर्पण हैं, वहाँ साधारण जनता के लिये ज्ञान का स्रोत है। तभी तो **महात्मा गांधी** ने कहा था कि **'समाचार पत्र का उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना व उन्हें व्यक्त करना तथा जनता में आवश्यक भावनाओं को जागृत करना है।'** [16]

समाचारपत्र आधुनिकता और आधुनिक संस्कृति के अत्यन्त संवाहक रहें हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में मुद्रण माध्यम प्रचार और विकास के साधन बन चुके हैं और विकसित देशों में वैचारिक और सांस्कृतिक संघर्ष के सूक्ष्म व तीक्ष्ण हथियार। भाषा का चमत्कार मुद्रण माध्यम से लेकर आधुनिक संचार तन्त्र के अनेक नये रूपों में देखा जा सकता है। विश्व के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश भारत में प्रेस का महत्व उल्लेखनीय है, इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध पत्रकार **बी0के0 नेहरू** का कथन उद्धृत किया जा रहा है–**'सरकार किसी भी तरीके से बनी हो, उसमें समाचारपत्रों की भूमिका निसन्देह महत्वपूर्ण है। तानाशाही सरकारे भी बिना**

लोकसमर्थन के नहीं चल पाती इसलिए प्रेस को राज्य का चौथा स्तम्भ कहा गया है। चूँकि तानाशाही सरकारों की अपेक्षा लोकतन्त्रीय सरकारों को जनभावना का ख्याल अधिक रखना पड़ता है, इसलिए लोकतन्त्रीय देशों में प्रेस की भूमिका शिखर पर होती है।[17]

विश्व के सभी विकसित और विकासशील देशों में समाचार पत्र–पत्रिकाएँ पढ़े जाते हैं। समाचार पत्र अपने प्रथम कर्तव्य, समाचारों के मुद्रण के अतिरिक्त समाज की परिवर्तनशीलता और अपनी कर्तव्यनिष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण यह है–जर्मनी के पूर्व चान्सलर **हेलमट श्मिट**[18] प्रधानमंत्री बनने से पहले एक बड़े अखबार के सम्पादकीय विभाग में काम करते थे। चांसलर पद से हटने के बाद फिर से उसी अखबार में जाने से वे नहीं हिचकिचाएँ। सबसे दिलचस्प बात यह रही कि जब वे चांसलर थे तो उसी अखबार में उनकी सरकार की जमकर आलोचना होती रही और गम्भीर राजनीतिक संकट भी पैदा हुए। इसी प्रकार एक व्याख्यानमाला में स्वतन्त्र प्रेस की महत्ता का वर्णन करते हुए कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री **रामकृष्ण हेगडे** ने भी कहा था कि **'प्रेस की आजादी राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए आवश्यक है। जहाँ लोग खुलकर अपने विचारों का आदान–प्रदान नहीं कर सकते, वहाँ कोई भी आजादी सुरक्षित नहीं है।**[19]

सदियों से दुनियाभर के समाचार पत्रों के इतिहास से पता चलता है कि कोई भी सरकार चाहे जितना भी जुर्म करे वह लोगों को अपने विचारों को स्वतन्त्रतापूर्वक अभिव्यक्त करने की इच्छा को दबा नहीं सकती। समाचारपत्र विचारों को जीवित रखने और लोगों की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा को अभिव्यक्त करने का काम बहुत अच्छी तरह से करते हैं। आज जितने समाचारपत्र निकलते हैं, उतने ही बन्द भी होते हैं। भारत में बहुत सारे समाचारपत्र और पत्रिकाएँ हैं लेकिन सुनने में जो संख्या बड़ी लगती है वह भ्रामक है। दैनिक पत्रों की ही उदाहरण ले, इसकी कुल प्रसार संख्या लगभग एक करोड़ है। यह तब है जब देश की आबादी सवा सौ करोड़ के आस–पास है। साथ ही कुछ पत्रकारों का यह भी कहना है कि समाचार पत्रों की अधिक बिक्री शहरों में होती है, इसलिए शहरों के समाचार अधिक स्थान पाते हैं और प्रायः विकास के समाचारों की अपेक्षा गांवों में होने वाले झगड़े, हत्याऐं, हिंसा, शोषण आदि के समाचार ही सुर्खियों में आ पाते हैं। सूचना क्रान्ति को लोकतन्त्र की दिषा में एक अग्रगामी कदम मानने वाले यह देखने में असमर्थ हैं कि इसका असर दुनिया के गरीब, मेहनतकश व अशिक्षित वर्गों पर क्या दिखाई दे रहा है।

टी0वी0 चैनल्स व अन्य जनसंचार माध्यमों के बढ़ने के बावजूद भी भारत ही नहीं, दुनिया के सम्पन्न देशों में भी अखबार का महत्व कम नहीं हुआ है। 85 साल पहले जब रेडियो का प्रचलन बढ़ा तो ये बहस चली कि अखबारों की छुट्टी हो जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि रोज नए–नए अखबारों का चलन व प्रसार बढ़ने लगा है। आज समाचार पत्रों के प्रकाशन, मुद्रण व वितरण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी बदलाव आ गया है। रंगीन प्रौद्योगिकीयों तथा लाखों की प्रसार संख्या के बावजूद आज समाचारपत्रों की विश्वसनीयता व प्रभाव कम होता जा रहा है। आज समाचारपत्रों का विस्तार भले ही बढ़ गया हो, किन्तु उनकी प्राणवान ऊर्जा धीरे–धीरे निर्बल होती

जा रही है। एक युग था जब अखबार में छपी बात गीता, कुरान और बाईबल की तरह पवित्र व प्रमाणिक मानी जाती थी, पर आज सामान्यतः लोग यह कहने में भी नहीं हिचकते हैं कि अखबार में कुछ भी छप जाता है.......कुछ भी छपवा लो। वस्तुतः स्थिति ऐसी ही है तो संतोषजनक नहीं है। यदि हमारी यही पहचान है तो अपनी इस पहचान के बारे में हमें गम्भीरता से सोचना होगा।

संदर्भ

1. ओमकार चौधरी, '*खोजी पत्रकारिता*', हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा, 2005, पृ0सं0–**03**
2. अग्रवाल सुरेश, '*जनसंचार माध्यम*', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ0सं0–**166**
3. खान अकील–उज–जफर, '*जिन्ना और मुस्लिम प्रेस*', जनमीडिया (पत्रिका), दिल्ली, जून 2015, पृ0सं0–**10**
4. भार्गव जी0एस0, '*भारत में प्रेस : एक सिंहावलोकन*', राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2009, पृ0सं0–**26**
5. मिश्र रवीन्द्र नाथ (सम्पादक), '*मीडिया और लोकतन्त्र*', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ0सं0–**17**
6. त्रिखा चन्द्र व लाल चन्द गुप्त (सम्पादक), '*चौथे स्तम्भ की चुनौतियाँ*', हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा, 2005, पृष्0सं0–**35**
7. पारख जवरीमल्ल, '*जनसंचार के सामाजिक संदर्भ*', अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2001, पृ0सं0–**09**
8. कुमार संजय, 'मीडिया : महिला, जाति और जुगाड़', प्रभात प्रकाषन, दिल्ली, 2017, पृ0सं0–**39**
9. सरकार चंचल, 'समाचारपत्रों की कहानी', राश्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 1991, पृ0सं0–**04**
10. राजेन्द्र, '*लोक सम्पर्क*', हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा, 2011, पृ0सं0–**305**
11. चोपड़ा लक्ष्मेन्द्र, '*जनसंचार का समाजशास्त्र*', आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा, 2002, पृ0सं0–**24**
12. मिश्र चन्द्रप्रकाश, 'मीडिया लेखन, सिद्धान्त एवं व्यवहार', संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0सं0–**37**
13. जैन रमो, ''*जनसंचार एवं पत्रकारिता खण्ड–2*', मंगलदीप प्रकाशन, जयपुर, 2003, पृ0सं0–**237**
14. यादव अवधेश कुमार, '*भारत में जनसंचार एवं पत्रकारिता*', हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, हरियाणा, 2013, पृ0सं0–**88**

15. विलानिलमजे0वी0, *'भारत में जनसंचार की संवृद्धि और विकास'*, राष्ट्रीय प्रस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2016, पृ0सं0–**173**
16. अग्रवाल सुरेश, 'वही', पृ0सं0–**125**
17. पाण्डेय ज्ञान प्रकाश, *'जनसंचार सिद्धान्त एवं शोध'*, मानव प्रकाशन प्रा0लि0, दिल्ली, 2005, पृ0सं0–**57**
18. त्रिखा चन्द्र व लाल चन्द गुप्त (सम्पादक), 'वही, पृ0सं0–**35**
19. मेहता आलोक, *'भारत में पत्रकारिता'*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2016, पृ0सं0–**73**